**ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA**
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 205-206**

**I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)**
**e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)**
**Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026**

# उत्तराखण्ड हिमालय में भू–संसाधन एवं पर्यावरण संरक्षण– एक सामाजिक अध्ययन

**डॉ0 प्रतापसिंह बिष्ट**

वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक/विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग,राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड) भारत

**Received-10.08.2026, Revised-19.08.2026, Accepted-26.08.2026,** **E-mail:dr.pratapsinghbisht@gmail.com**

***सारांशः*** ***मानव सभ्यता और प्रकृति के बीच भू– संसाधन और पर्यावरण संरक्षण का अटूट सम्बन्ध रहा है।" माता भूमिः पुत्रों अहं पृथिव्याः अर्थात पृथ्वी हमारी माता है एवं हम सभी राष्ट्र निवासी इस धरा की संतान हैं। ऐसे विचारों की पोषक हमारी भारतीय संस्कृति जिसमें आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विष्वतो दब्धासो अपरितासउद्भिदः अर्थात कल्याणकारक, न दबनेवाले, पराभूत न होने वाले, उच्चता को पहुंचाने वाले शुभकर्म चारों ओर से हमारे पास आयें भी प्राचीन काल से ही भारतीय सभ्यता और संस्कृति के उत्तराखण्ड़ में वाहक रहे हैं।***

***हिमालय का मध्य क्षेत्र उत्तराखण्ड़ (गढवाल एवं कुमायूँ ) अपने ऐतिहासिक काल से ही भारतीय सभ्यता और भौतिक साधनों का प्रतीक रहा है। हिमालय की गोद में अवस्थित कुमायूँ एवं गढ़वाल को अपनी प्राकृतिक सौन्दर्य, हिम से ढ़की हुई नदियों,नालों, वनस्पतियों एवं जीव–जन्तुओं के साथ–साथ आध्यात्मिक ज्ञान व परम्परा के लिये सम्पूर्ण विश्व में आकर्षण का केन्द्र भी रहा है। आर्थिक व सामाजिक दुर्बलताओं के साथ विषम भौगोलिक परिस्थितियों के कारण वर्षों पुरानी पृथक पर्वतीय राज्य उत्तराखण्ड़ की मांग पूर्ण होने के फलस्वरूप नवोदित राज्य उत्तराखण्ड़ अस्तित्व में आने के बाद उत्तराखण्ड़ियों के जनमानस के बीच यह सन्देश अपार उत्साह एवं अपेक्षाओं को एक बड़ी उपलब्धि के तौर पर देखा गया है कि हिमालय के मध्य क्षेत्र में वनों एवं वनस्पतियों की प्रचुरता का बड़ा महत्व है। इसी हिमालयी प्रभाव के कारण प्राचीन काल से ही पर्यावरण के परिणाम स्वरूप ब्यास जैसे महर्षि ने सर्वोत्तम ग्रंथों की रचना हेतु इसे उर्वरा भूमि माना। ऋग्वेद में श्रेष्ठ विचार हमें प्राप्त हों जैसा सन्देश इसी भूमि पर प्रकाशित हुये हैं।***

***कुंजीभूत शब्द– भू–संसाधन,पर्यावरण संरक्षण, पोषक, भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता,हिमालय की गोद, प्राकृतिक सौन्दर्य, जनमानस।***

**प्रस्तावना–** भू–संसाधन प्राकृतिक पर्यावरण के अन्तर्गत एक अति महत्वपूर्ण संसाधन है, जिस पर जैविक तत्वों का अस्तितव निर्भर करता है। पृथ्वी के अधिक से अधिक जीव–जन्तु इस पर आश्रय पाते हैं। भू–संसाधन से अभिप्रायः प्रकृति प्रदत्त वे सभी भौतिक पदार्थ जो मानव से सम्बन्धित आवश्यकता पूरी करते हैं, प्राकृतिक संसाधन हैं। प्रकृति से मानव को अनेक वस्तुयें प्राप्त होती हैं, किन्तु प्रत्येक वस्तु अपने आप में संसाधन नहीं होती हैं। कोई भी वस्तु संसाधन की श्रेणी में तभी आती हैं, जबकि मानव के सम्बन्ध में वे उसका कोई उपयोग हो अथवा वह मानव की आवश्यकता की पूर्ति करती हो।

जब मनुष्य ने पशुचारण अवस्था से कृषि युग में प्रवेश किया, उस समय से लेकर आज तक उसकी आर्थिक क्रियाओं का मुख्य–आधार भू–संसाधन नही रहा है। भूमि में ही प्राकृतिक वनस्पतियां पैदा और विकसित होती हैं। हिमालय की पूरे गढ़वाल एवं कुमायूँ गढवाल के पर्यावरणीय सन्तुलन में अहम भूमिका रही है। कुमायूँ और गढ़वाल का भू–भाग 51125 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल है। 3428.9 हजार हेक्टयर वन क्षेत्र है, जिसमें से वन विभाग के अधीन आश्रित क्षेत्र 23916 हजार हेक्टयर सिविल स्वंय वन 704.4 हजार हेक्टयर, पंचायती वन 333.8 हजार हेक्टयर तथा निजी कन्टोनमेंट एवं नगर पालिका के अन्तर्गत 29.1 हजार हेक्टेयर वन क्षेत्र है। कुल भूमि का 63.95 प्रतिशत भाग उत्तराखण्ड़ में वन क्षेत्र है। प्राकृतिक वनस्पति, जल, जलवायु तथा मिट्टी का अटूट सम्बन्ध है और इन्हीं तत्वों पर सम्पूर्ण जैव मंडल आधारित है। भू–संसाधनों की उपलब्धता पर ही कृषि निर्भर है। मनुष्य के भोजन के लिये भी कृषि सर्वाधिक आवश्यक है।

दूसरे शब्दों में भौतिक एवं अभौतिक संस्कृति जिसे सभ्यता कह देते हैं, आरम्भ काल से ही मानव समाज और प्रकृति का अटूट सम्बन्ध रहा है। प्रकृति ने अनेक रूपों में मानव को अपनी ओर आकर्षित किया है। निःसन्देह प्रकृति मानव जगत की सच्ची सहचरी है। उसने मानव के जीवन को सुखी ओर समृद्ध बनाया है। छायादार वृक्षों ने उसे घनी छाया दी है। पुष्पों ने उसे सुगन्ध प्रदान की है एवं फूलों ने उसकी भूख मिटाई है। पर्वत व झरनों से निकल ने वाली नदियों ने इनकी प्यास को शांत किया है। बसन्त और पतझड़ ने उसे सुख, समृद्धि और दुःख की अनुभूति कराना सिखाया है। इस प्रकार प्रकृति से मनुष्य धनिष्ट रूप से सह–सम्बन्धित है। हमारे ज्ञान शास्त्रों में पेड़, पौधों, पुष्पों, पहाड़, झरनें, पशु–पक्षियों, जंगली जानवरों, नदियों, सरोवरों, वन, मिट्टी व घाटियों, यहां तक की पत्थर भी पूज्य माने गयें हैं। बुद्धिजीवियों तथा विचारकों द्वारा किया गया, यह चिन्तन पर्यावरण को संरक्षण प्रदान करने और प्रदूषण से मुक्त रखने के लिये सार्थक विचार रहा है। इसलिये उत्तराखण्ड़ के धरातल पर पर्यावरण का अत्यधिक महत्व है।

हिमालय में पर्यावरण के सरंक्षण एवं भू–संसाधन के लिये इतिहास साक्षी है कि विश्व की महान सभ्यतायें फली एवं फूली हैं, जहां पर भू–संसाधनों की प्रचुर उपलब्धता रही है। वर्तमान विश्व में आधे से अधिक जनसंख्या भू–संसाधनो पर ही निर्भर रहती है। भू–संसाधनों पर ही किसी देश का राष्ट्रीय ढांचा निर्भर करता है। आज भू–संसाधनों के अनियंत्रित और अंधाधुन्ध उपयोग से उन्हें खतरा उत्पन्न हो गया है। जहां एक ओर भू–संसाधनों के उपर बढ़ता जनसंख्या का दबाब है, वहीं दूसरी ओर कृषि एवं भारी उद्योगों के बोझ से दबते, सिकुड़ते एवं प्रदूषित होते जा रहे हैं। वर्तमान में भू–संसाधन अपने संरक्षण एवं प्रबन्धन की अपेक्षा चाहते हैं। हिमालय दूसरी पर्वतीय श्रृंखलाओं की अपेक्षा युवा अवस्था में है, किन्तु सम्पूर्ण भारत विशेषकर उत्तराखण्ड़ के लिये यह अद्भुत विरासत है। हिमालय उत्तराखण्ड़ की जलवायु एवं ऋतुओं को भी नियंत्रित नहीं करता, अपितु सदाबहार नदियों एवं उनकी सहायक नदियों को निरन्तर व निश्चित जीवन भी प्रदान करती है। जल संपदा व खनिज के अलावा अतिरिक्त कृषि, पर्यटन के साथ–साथ वन भूमि भी हिमालय का आधार है। मुख्य रूप से वन व जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि के कारण सुरक्षित नहीं रह पाते हैं। सभ्यता के विकास के नाम पर बढ़ते जन दबाव ने हरियाली की मात्रा को कम कर दिया है। वृक्षों की अंधाधुन्ध कटाई ने वनों का आकार कम दिया है और वनों के कटान व उपेक्षा से प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो गई है। अन्यथा वृक्ष सम्पूर्ण प्रकृति के आंगन में श्रृगांर है। वृक्षों के बिना प्रकृति का सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। दुष्परिणामों को जानते हुये भी संघन वनों को काटकर नगरीकरण को बढावा दिया जा रहा है, जिसमें पर्यावरण स्वच्छता का मुद्दा भी गम्भीर होता जा रहा है।

**अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक**

वृक्षों का मुख्य कार्य मिट्टी के कटान को रोकना है, किन्तु अनियंत्रित कटान से बाढ़ भी अधिक आ रही हैं और पुनः मिट्टी का संरक्षण भी नहीं हो पाता है। बाढ़ से प्रतिवर्ष जानमाल का खतरा भी बना रहता है। जलवायु एवं ऋतु परिवर्तन से भूमण्डलीयकरण के कारण वर्षा भी समय से नहीं हो पाती हैं, जिससे कृषि कार्य प्रभावित होता है। यद्यपि 20 सूत्री कार्यक्रमों के अन्तर्गत वृक्षारोपण को एक कार्यक्रम के रूप में स्वीकार किया गया था, किन्तु उसके आशातीत परिणाम नहीं निकले हैं।

हिमालय को उत्तराखण्ड़ क्षेत्र अत्यधिक प्रभावित हुआ है। परिणाम स्वरूप केदारनाथ, (जनपद रूद्रप्रयाग) घराली (जनपद उत्तरकाशी) व थराली (जनपद चमोली ) आदि में आयी आपदा इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है। हिमालय की आध्यात्मिक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक आदि गतिविधियों पर इसका प्रभाव विचारणीय है। यद्यपि आज भी वैज्ञानिक हिमालय और उससे जुड़े हुये उत्तराखण्ड़ का विशेषकर अनुकुलताओं का अध्ययन अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने हेतु अन्वेषणों में क्रियाशील हैं, फिर भी जड़ी–बूटियों व उनके भण्ड़ारण धार्मिल स्थलों का संरक्षण, मनमोहक दृश्यों का प्रचार–प्रसार पवित्र नदियों के मूल स्त्रोतों, यत्र–तत्र सरोवरों को सवारने की भी आवश्यकता है। भू–संसाधनों का संरक्षण एवं प्रबन्धन सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं, जिससे हिमालयी पर्यावरण गढ़वाल और कुमायूँ क्षेत्र सुरक्षित रह सके। बिना अर्थ व्यवस्था व पारिस्थति संतुलन के संरक्षण सम्भव नहीं है। संरक्षण के अभिप्रायः संसाधनों के दुरूपयोग को रोकना है, जिससे उन्हें लम्बे समय तक सुरक्षित रखा जा सके। भू–संसाधनों का तात्पर्य विकास करने से भी है। जैसे– मिट्टी के संदर्भ में मिट्टी को संरक्षित कर उपजाऊ शक्ति के रूप में नष्ट होने से बचाया जा सके।

निम्न सुझावों को अम्ल में लाकर भू–संसाधनों के संरक्षण एवं प्रबन्धन की प्रक्रिया को अधिक परिष्कृत किया जा सकता है, जिससे हिमालयी पर्यावरण को खतरा होने से बचाया जा सके।

1. बड़े पैमाने पर वनो का दोहन रोका जाय व वनों की अत्यधिक क्षति तथा पशु चुगान पर नियंत्रण किया जाना चाहिये।
2. पर्वतीय क्षेत्रों में मुख्य नदियों एवं उनकी सहायक नदियों तथा घाटियों के दोनों ओर ढ़लान वाले क्षेत्रों में मिट्टी बांधने वाली व मिट्टी के कटान को रोकने वाली विभिन्न प्रजातियों के वृक्ष एवं फलदार वृक्षों को रोपण किया जाना चाहिये।
3. भूमिगत तथा सतह की जलराशी का उपयोग छोटे–छोटे चैकडैम बनाकर संरक्षित किये जाने चाहिये ।
4. ढ़लान वाली जगह पर मिट्टी के कटान व दबान को रोकने वाली विशेष प्रजाति की घास की पैदावार बढ़ाने चाहिये, जिससे कटान रूक सके।
5. नदियों नालों के किनारे जल बहाव को रोका जाना चाहिये ।
6. बांध स्थल पर तथा जलाशयों के चारों ओर एवं जलाशयों के क्षेत्रों में मिट्टी को बांधने वाले पौधे लगाये जाने चाहिये।
7. मैदानी भागों में खेतों की मेंढ़ बन्दी करना चाहिये।
8. किसी बंजर पहाड़ी पर अनुकूल पौधे लगाकर बंजर को हरित भूमि की ओर परिवर्तित करना चाहिये।
9. कृषि वैज्ञानिक तरीके से हो तथा फसल बैंक विधि व्यवहार में लानी चाहिये।
10. मरूस्थलीय एवं अर्ध मरूस्थलीय क्षेत्रों में रक्षात्मक वृक्षों की पटट्यिां विकसित की जानी चाहिये।

**सारांश–** सम्प्रति पर्यावरणीय एवं भू–संरक्षण का संकट सम्पूर्ण मानव जगत के समक्ष एक गंभीर चुनौती के रूप में उपस्थित है। जल वायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का अनुचित दोहन, वैश्विक तापमान में वृद्धि, प्रदूषण असुन्तलन, जैव विविधता का क्षरण, असुन्तलित मानव विकास आदि मानव सभ्यता एवं अस्तित्व के लिये गंभीर खतरा बन चुके हैं। भारतीय ज्ञान–परम्परा में प्रकृति को केवल उपभोग की वस्तु नहीं, बल्कि जीवन का आधार एवं सह अस्तित्व का प्रतीक माना गया है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृतियां तथा लोक परम्परायें पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास का वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं और दूसरी ओर आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी भू–क्षरण एवं की चुनौतियों के समाधान हेतु दिन प्रतिदिन नये शोध एवं तकनीकियों का विकास कर रहे हैं। इन्हीं दोनों आयामों के समनवित अध्ययन को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

मध्य हिमालयी पर्यावरण के गढवाल एवं कुमायूँ भू–भाग में सबसे बड़ी चुनौती भू–संरक्षण की रही है। यद्यपि नीति–नियंता यह कहते हुये अपना तर्क रखते हैं कि हमारे पास प्राकृतिक संसाधनों–जल, जंगल व जमीन का अपार भण्ड़ार है और इन मौलिक संसाधनों के बल पर उत्तराखण्ड़ समृद्ध और विकसित राज्य बन जायेगा, किन्तु दूसरी ओर इन तथ्यों को प्रकाशित नहीं किया गया है कि यह संरक्षण किस प्रकार और कैसे होगा ? भू–संसाधन किसी भी देश के विकास की रीढ़ होती है। भू–संसाधनों के संतुलित संरक्षण व प्रबन्धन के कारण ही उत्तराखण्ड़ अग्रणीय राज्य की पंक्ति में आ सकता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह, राजेश – भू–संसाधन, संरक्षण एवं प्रबन्धन का महत्व –सितम्बर 1991.
2. सिंह दली – मध्य हिमालय में पर्यावरण संरक्षण की समस्यायें – ई0 एन0 वी0 आई0 एस0 बुलेटिन, वोल्यूम 9 न0 1, 2001.
3. सिंह दलीप – उतरॉचल का विकास – कुरूक्षेत्र, दिसम्बर 2001.
4. बिष्ट दलीप सिंह –योजना, मार्च 1999.
5. वाता – वार्षिक पत्रिका संयुक्तांक 2021–2022 –2023– 2024 राजकीय स्नात्तकोत्तर महाविद्यालय कोटद्वार, पौड़ी गढवाल।
6. जी0 घोलप – डॉ0 बापू –विद्यावार्ता –पीर रिब्यूड़ इंटर नेशनल जनरल, अक्टूबर से दिसम्बर 2020.
7. जी0 घोलप – डॉ0 बापू–विद्यावार्ता –पीर रिब्यूड़ इंटर नेशनल जनरल, जुलाई से सितम्बर 2023.
8. जोशी, डॉ0 रतन संस्करण – पर्यावरण अध्ययन संस्करण – 2004, साहित्य भवन पब्लिकेशन – आगरा उत्तर प्रदेश।
9. शुक्ल, प्रो0 त्रिभुवननाथ – पर्यावरण अध्ययन संस्करण 2009 हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल मध्य प्रदेश।
10. शर्मा दामोदर एवं ब्यास हरिशचन्द्र – आधुनिक जीवन और पर्यावरण संस्करण 1991, प्रभात प्रकाशन दिल्ली।
11. अवस्थी, डॉ0 एम0 एन0 – लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा उत्तर प्रदेश.
12. सिन्हा, सचिदानन्द – भूमण्ड़लीयकरण की चुनौतियां, वाणी प्रकाशन संस्करण 2012.
13. शाह, गिरिराज व शाह सरिता – परिक्रमा डांयमण्ड़ पॉकेट बुक्स – 2013 मुद्रक आदर्श प्रिंटर्स, दिल्ली – 32.
14. देशमुख, संतोष कुमार वन संरक्षण बनाम आदिवासियों की जलावन की समस्या, सितम्बर 1999.

*****